SANKHYA -THE THEORY OF PURUSA OR SELF

सांख्य - पुरूष

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

सांख्य दर्शन को द्वैतवादी दर्शन कहा जाता है।वह दो तत्वों को मूल तत्व मानता है - प्रकृति और पुरूष को।सांख्य दर्शन में पुरूष का अर्थ एक सामान्य सशरीर व्यक्ति से न होकर एक विशेष अर्थ में है -पुरुष विशुद्ध आत्मा है जो शरीर, मन, बुद्धि और अहंकार आदि से सर्वथा भिन्न है।

भारतीय दर्शन में जिस सत्ता को अधिकांश दार्शनिकों ने आत्मा कहा है उसे ही सांख्य दर्शन में पुरूष कहा गया है।

प्रकृति और पुरूष एक दूसरे से भिन्न हैं। प्रकृति अचेतन है जबकि पुरूष चेतन है । पुरुष सत्व रजसऔर तमस से शून्य है जबकि प्रकृति इन तीनों से अलंकृत है। पुरुष को त्रिगुणातीत और प्रकृति को त्रिगुणमयी कहा गया है। पुरुष ज्ञाता है जबकि प्रकृति ज्ञान का विषय है। पुरुष निष्क्रिय है जब की प्रकृति सक्रिय है। पुरुष अनेक है जबकि प्रकृति एक है। पुरुष कार्य-कारण से मुक्त है जब की प्रकृति कारण है। पुरुष पुरुष अपरिवर्तनशील है जब की प्रकृति परिवर्तनशील है।पुरुष विवेकी है परंतु प्रकृति अविवेकी है ।

पुरुष को चेतन कहा जाता है जबकि प्रकृति को जड़ कहा गया है। किसी भी अवस्था में पुरुष की चेतना समाप्त नहीं होती। यह जाग्रत अवस्था के साथ-साथ स्वपनावस्था एवम सुषुप्ति अवस्था मैं भी बनी रहती है।

पुरुष स्वभाव से अकर्ता एवं अभोक्ता कहा जाता है।लेकिन अविद्यावस अपने को कर्ता एवम भोक्ता समझता है ।इसे दृष्टा भी कहा जाता है। सांख्य दर्शन में सुख दुख दोनों ही त्रिगुणात्मक प्रकृति से उत्पन्न विकार माने गए हैं। पुरुष को सुख दुख से हटकर बताया गया ह।

वेदांत दर्शन जहां एक आत्मा या पुरुष की बात करता है वही सांख्य दर्शन अनेक पुरुष या आत्मा की बात करता है अर्थात सांख्य दर्शन में पुरुष की संख्या अनेक माने गए हैं। पुरुष अनेक हैं ,यह इससे भी सिद्ध होता है कि कि प्रत्येक व्यक्ति का जन्म अलग-अलग होता है मृत्यु अलग होती है और इंद्रियों की क्रियाएं भी अलग होती हैं यदि पुरुष एक ही होते हैं तब यह समस्त क्रिया है भिन्न-भिन्न ना होकर एक ही होती।

पुरुषों अनेकता को उसमें दिखाई देने वाली प्रवृत्ति के आधार पर भी सिद्ध किया जाता है जैसे कोई व्यक्ति रोता हुआ, कोई हंसता हुआ, कोई काम करता हुआ दिखता है तो

कोई आराम भी करता हुआ नजर आता है। यदि पुरुष एक ही होते हैं तो यह भिन्नता नहीं होती।

इस संसार में अलग-अलग स्वभाव के भी मनुष्य दिखाई पड़ते हैं, किसी व्यक्ति को अध्ययन व चिंतन मनन रुचि होती है, तो किसी को वीरता के कार्यों में मन लगता है एवं किसी को परोपकार में ही आनंद मिलता है। यह सब इस कारण होता है क्योंकि प्रकृति में तीन गुण सत रज तम उसके अलग-अलग स्वभाव को प्रेरित करते हैं। इसी वजह से किसी की प्रवृत्ति सात्विक होती है किसी की राजसिक और किसी की तामसिक। यदि पुरुष अनेक नहीं होते तब हमें इस तरह की भिन्नता देखने को नहीं मिलती।

पुरूष और प्रकृति के बीच सम्बन्ध को लेकर सांख्य दर्शन में समस्या रही है। प्रकृति सक्रिय लेकिन अचेतन है। पुरुष निष्क्रिय लेकिन चेतन है।प्रकृति पुरुष के प्रयोजनों को सिद्ध करने के लिए काम करती है वह पुरुष के भोग के लिए जगत के रूप में परिणत होती है। प्रकृति सत्व रजस और तमस की साम्यावस्था है। वह जगत का उपादान कारण है। पुरुषों के सन्निधि से प्रकृति की साम्यावस्था टूट जाती है जैसे चुंबक लोहे को अपनी सन्निधि मात्र से चलाता है, वैसे ही पुरुष सन्निधि मात्र से प्रकृति को सक्रिय करता है ,जैसे अंधा लंगड़े से मिलकर चलने लगता है वैसे ही प्रकृति पुरुष के सहयोग से अपने परिणाम पैदा करती है। जो लंगड़ा होने से चल नहीं सकता वह दृष्टि के अच्छे होने से अंधे के कंधों पर बैठकर उसको सही रास्ता दिखाता है। इसी तरह चेतन लेकिन निष्क्रिय पुरुष जड़ और सक्रिय प्रकृति को रास्ता दिखाता है।पुरुष लंगड़े की तरह है प्रकृति अंधे की तरह। जिस प्रकार लंगड़ा अंधे को रास्ता दिखाता है उसी प्रकार पुरुष प्रकृति को रास्ता दिखाता है। प्रकृति अचेतन है और चेतन पुरुष की पथ प्रदर्शन में उसके प्रयोजन की पूर्ति के लिए जगत की सृष्टि करती है। प्रकृति का परिणाम सप्रयोजन या निष्प्रयोजन नहीं है।वह पुरुष के प्रयोजनों के सिद्धि के लिए होता है लेकिन प्रकृति को इस बात का ज्ञान नहीं होता प्रकृति अचेतन रूप से पुरुष के अर्थ की सिद्धि करती है ।इसे और अधिक स्पष्ट करने के लिए सांख्य दर्शन में दृष्टांत दिया गया है - प्रकृति अचेतन रूप से पुरुषार्थ का साधन उसी प्रकार करती है जिस प्रकार अचेतन दूध बछड़े के पोषण के लिए थनों से उतरता है या जिस प्रकार अचेतन पेड़ पुरुषों के धर्माधर्म के अनुसार उनके भोग के लिए फल पैदा करता है। पुरुष नित्य, मुक्त हैं। उनका बंधन और मोक्ष केवल अभिमानी है वास्तव में बंधन और मोक्ष प्रकृति का होता है। बन्धन अविवेकी पुरुषों के हेतु प्रकृति की सक्रियता है और मोक्ष विवेक प्राप्त पुरुषों के हेतु प्रकृति की क्रिया का रुक जाना है। प्रकृति पुरुषों के मोक्ष के लिए क्रिया करती है और उनको मोक्ष मिल जाने पर उसकी क्रिया रुक जाती है, वैसे ही जैसे बंधन में पड़ा हुआ पुरुष मोक्ष पाने का प्रयत्न करता है और मोक्ष प्राप्ति की इच्छा के पूरे होने पर अपना प्रयत्न छोड़ देता है।

पुरुष की सत्ता को प्रमाणित करने के लिए सांख्यकारिका के श्लोक को सांख्य दर्शन में सुन्दर ढंग से किया गया है, जो निम्नवत है : -

संघातप्रार्थत्वात त्रिगुणादि विपर्ययादधिष्टनात ।
पुरुषोस्ति भोक्तृभवात कैवल्यार्थ प्रवृत्तेस्च ।।

इस श्लोक में पुरूष को प्रमाणित करने के लिए जिन तर्कों का सहारा लिया गया है, वे पाँच हैं : -

संघातप्रार्थत्वत - सांख्य दर्शन के अनुसार संघात अर्थात पदार्थों का अस्तित्व किसी अन्य के है उपयोग के लिए ही होता है।मन, इन्द्रियाँ, शरीर, अहंकार, बुद्धि आदि संघातमय पदार्थ हैं।जिस प्रकार पलंग का उपयोग अपने में नहीं है उसका उपयोग व्यक्ति के सोने में है उसी प्रकार विश्व के इन वस्तुओं का निर्माण दूसरों के प्रयोजन के लिए हुआ है।अतः पुरुष की सत्ता प्रमाणित होती है।

त्रिगुणादिविपर्यात - जगत के भौतिक पदार्थ त्रिगुणात्मक होते हैं पर कोई ऐसा होना चाहिए जो इनका द्रष्टा हो।ऐसा द्रष्टा स्वयं त्रिगुणों से परे पुरुष ही होगा।

अधिष्ठानात - अचेतन भौतिक पदार्थ अपनी क्रियाओं का प्रदर्शन चेतन सत्ता के द्वारा करती हैं।प्रश्न यह उठता है कि वह चेतन सत्ता कौन है ? सांख्य के अनुसार वह चेतन तत्व पुरुष ही है जो प्रकृति, महत, अहंकार, मन आदि अचेतन पदार्थों का पथ प्रदर्शक है। यहाँ अधिष्ठाता के रूप में पुरूष ही है।

भोक्तृभवात - जगत के पदार्थ जो कि भोग्य हैं का भोक्ता होना परम आवश्यक है। प्रश्न उठता है कि इनका भोक्ता कौनहै ? प्रकृति तथा उससे उत्पन्न शरीर, मन, इन्द्रिय आदि तो जड़ हैं, इनमें भोग करने की शक्ति नहीं होती।इसलिए इनके भोक्ता के रूप में पुरुष का अस्तित्व सिद्ध होता है।

कैवलयार्थप्रवत्ते - मोक्ष दुःखों के विनाश को कहा जाता है।मुक्ति की कामना भौतिक विषयों के लिये संभव नहीं है।जगत में जीवात्माओं द्वारा दुःख से तथा प्रकृति के बंधन से मुक्ति प्राप्ति हेतु देखा गया है।इस तरह का प्रयत्न जड़ पदार्थ नहीं करते,इसलिए जड़ पदार्थ से भिन्न चेतन पुरूष का, जो मोक्ष हेतु प्रयत्न करता है का अस्तित्व सिद्ध होता है।

इस तरह सांख्य दर्शन में पुरुष एक ऐसा तत्त्व है जो कि प्रकृति से अलग अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखता है जो नित्य, ज्ञानस्वरूप, मुक्त, त्रिगुणातीत, निष्क्रिय,अभोक्ता, सुख-दुःख से परे तथा अनेक है।